दुपारचे भजन

(1)

धन्य हो प्रदक्षिणा सद्गुरूरायाची ।
धन्य धन्य हो प्रदक्षिणा श्रीगुरूरायाची ।।
झाली त्वरा सुरवरां विमान उतरायाची ।।ध्रू.।।
पदोपदीं घडल्या अपार पुण्याच्या राशी।
सकळली तीर्थें घडलीं आम्हां आदि करूनि काशी ।।1।।
कोटि ब्रह्महत्या हरती करितां दंडवत।
लोटांगण घालितां मोक्ष लोळे पायांत ।।2।।
मृदंग टाळ धोळ भक्त भावार्थे गाती ।
नामसंकीर्तनीं नित्यानन्दें नाचती ।।3।।
गुरूभजनाचा महिमा नकळे निगमां आगमांसी ।
अनुभव जे जाणती ते गुरूपदिचे अभिलाषी ।।4।।
प्रदक्षिणा करूनी देह भावें वाहिला ।
श्रीरंगात्मज विठ्ठल पुढें उभा राहिला ।।5।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

दोपहर के भजन

(1)

श्रीसद्गुरूराय की प्रदक्षिणा करना धन्य है, क्योंकि (उसे देखने के लिये) विमानों को नीचे लाने में देवों में भी त्वरा हो रही है।।ध्रु.।। (प्रदक्षिणा के) पद-पद पुण्यों की अपार राशि बन गये (इसमें ही) काशी एवं अन्य सभी तीर्थ हमने कर लिये ।।1।। दण्डवत् करने से कोटि ब्रह्महत्या का हरण होता है, और लोटांगण करने से मोक्ष पांवों के पास लोटता है।।2।।

मृदंग और टाळ बजाते हुए भक्त-वृंद प्रेम से गायन करते हैं और नित्य नाम-संकीर्तन करके आनंद में नाचते हैं।।3।।

गुरू-भजन की महिमा निगम और आगम की समझ में नहीं आती, किन्तु जिनको अनुभव मिला है वे ही गुरू-चरणों की अभिलाषा करेंगे ।।4।। श्रीरंगात्मज कहते हैं कि मैंने प्रदक्षिणा करके ज्योंहि अपना देहभाव अर्पण किया त्योंहि विठ्ठल मेरे सामने खड़े हो गये ।।5।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(2)

अलक्ष्य लक्षुनि पाहे निजवस्तु। परात्पर चिन्मय ब्रह्मरूप तेज प्रत्यक्ष आहे।। गुरूपद वंदुनि आधिं पाहि तूं। ह्रदयांतरिं शोधुनी मनाते धुर्त करी बोधुनी।। कामक्रोध मदमत्सर अंगी। दंभाहंकार जिरवुनी द्वैत कल्पना मार त्यागुनी। एकाग्रे मन स्वस्थ करोनी। बैस पद्मासनीं मुद्रा लाव आत्मभाषणीं।। दृष्टी आंत दृष्टी सुरंग। करूनिया समदृष्टि मग। नाना तऽहेचे रंग सुरंग। रक्तश्वेतवत आहे। पुढें नीलवर्ण तेज जाणावें।।1।। नीलवर्ण तें बिंबाकाशी। चैतन्याची मुस त्यामध्यें वस्तु जडली असे।। त्रिकुट भेदुनी उलट जातां। मीन मार्गे धसे रूप अरूप होउनी प्रवेश।। उन्मन होऊनियां ब्रह्मरंध्रीं। समाधि लावुनि वसे तेथे काळ कदा न धसे।। सिद्ध पुरूष तो योग साधुनी। तापा स्तवितो करून हरण। आपुला आपण राहे निमग्न। त्यालाचि प्राप्ति होय चराचर अवघेचि ब्रह्म आहे ।।2।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(2)

गुरूचरणों की वंदना करके अलक्ष्य निजवस्तुपर लक्ष लगाओगे तो परात्पर चिन्मय ब्रह्मरूप तेज प्रत्यक्ष देखोगे। हृदय में पहले शोध करके मनको बोध करो और सावधान रहो। काम, क्रोध, मद, मत्सर, दंभ, अहंकार और द्वैत-कल्पना का मर्दन करो। मन एकाग्र और शान्ति करके पद्मासन में बैठो और आत्म-भाषण में मग्न होओ (अर्थात् सद्गुरू ने जो नाम दिया है उसका स्मरण करते रहो) दृष्टि को अंतर्मुख और सम बनाकर नाना प्रकार के रक्तश्वेतादि सुंदर-सुंदर रंग देखो। इसके पश्चात् नीलवर्ण सुंदर-सुंदर रंग देखो। इसके पश्चात् नीलवर्ण तेज दिखाई देगा।।1।। चिदाकाश में जो नीलवर्ण बिंब देखोगे वही चैतन्य की मुष है और उसमें परब्रह्म समाया है। त्रिकुटि को भेदकर जो योगी मीन की भांति (जलधारा के उलटा) जाएगा, वह ब्रह्मरंध्र में अरूपस्थिति में रहेगा और उन्मनी अवस्था हो जाएगी। उस समाधि में कालका भान नहीं रहेगा। इस प्रकार का योग साध कर सिद्ध पुरूष (विविध) तापों का हरण करके अपने आपमें निमग्न रहता है। 'सब चराचर ब्रह्म है' यह अनुभूति उसी को होती है।।2।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

सद्‌गुरूकृपा जखम जिव्हारीं। ज्याला घाव लागेल तोचि घायाळगती घुंमतो।। बीजमंत्र हा जप गायत्री। अष्टौप्रहर योजितो साधन घडि पळ घडि साधितो।। अहंभाव मीपण तनधन। गुरूचरणी अर्पितो तो हा मूळ पित्या इच्छितो। अखंड तन्मय त्यांत लुब्धुनी। निज वस्तु लक्षितो लोचनी। निरपेक्ष तो निर्मळ प्राणी। जगांत वेडा राहे अंतरीं ज्ञानबोधरस पिये ।।3।। सद्‌गुरू कृपा उत्तम ज्यासी। सहज हातासी आली त्याला निजवस्तु लाधली।। पाहातां पाहातां आत्मज्योत ही। वैराग्यें पाजळली चिन्मय वस्तु झगमगली।। शाहालिरंग संत प्रमाण। धन्य गुरूमाउली आनंदे हरिवर कृपा केली।। कनवकटाक्षे करि सिद्धान्त। गणपति भीमसेन गातो समेत। गुरूपुत्र तो ज्ञानवंत। ऐकुनि तल्लिन होये लुंगरा व्यर्थ चावटी वाहे।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

जिसको सद्गुरूकृपा का मार्मिक घाव लगता है वही घायल होकर उनसे मिले हुए गायत्री (सम) सबीज मंत्र का पल-पल, घड़ी-घड़ी, आठों प्रहर विह्वलता से घोष करता है। तन, मन, धन और अहंकार को जो गुरूचरणों पर अर्पण करता है, वह (सबके) मूलपिता से मिलने की इच्छा करेगा, तथा तन्मय व लुब्ध होकर नयनों से निजवस्तु को देखता रहेगा। ऐसा पुरूष निरपेक्ष और निर्मल होता है। वह जगत् में पागल की तरह दिखाई देता है, किन्तु अंदर से ज्ञान बोधरस पीता है।।3।।

जिस पर उत्तम प्रकार से सद्गुरूकृपा हो गई है उसके हाथ अनायास निजवस्तु आती है। इस आत्म ज्योति को देखते-देखते वैराग्य प्रज्वलित होता है और चैतन्यमय वस्तु भी जगमग व तेज पुंज दिखाई देती है। यह बात संत शाहालिंग प्रमाणित है। गुरूमाता धन्य है जिनके कारण श्रेष्ठ हरि के प्रसन्न होकर कृपा कटाक्ष करने पर गणपति भीमसेन ने यह सिद्धान्त सभा में गाया। जो ज्ञानवंत गुरूपुत्र है, वे ही यह सुनकर तल्लीन होंगे और दूसरे मूर्ख लोग तो व्यर्थ की वाचालता करते रहेंगे।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(3)

काय सांगू या समर्थाची थोरी । भजकासी आपण
ऐसा करी ।।धृ।। सद्गुरूराजा तन्मय छत्रपति। मज
करूनी सेवे अधिपति ।
सोऽहं शब्द सनद देउनि हातीं।
शिरीं हात ठेविला मुद्रांकित ।।1।।
अहंकाराचे दुर्ग आवरिले । तयावरी मजला पाठविलें।
पूर्वद्वारे त्रिकुट देखियेलें। रजोदृष्टीब्रह्मयासीजिंकीयेले
।।2।।
तेथुनि ऊर्ध्वपंथे पश्चिममार्ग पाहे।
सत्त्वगुणी श्रीहाटी विष्णु आहे।
तया वळंघोनी वरूता जाये।
तमोगोल्हाटी रूद्र दिसताहे ।।3।।
ज्ञानशस्त्र घेउनिया हाती । केली तमो-अज्ञानाची शांती ।
पुण्यगिरी तेथुनि देखे पुढती।
शुद्ध अधिष्ठानी विश्वूर्ती ।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(3)

समर्थ सद्गुरू की महिमा मैं कैसे वर्णन करूं? उनका जो भजन करता है उसको वे अपने जैसा बना देते हैं।।ध्रू.।।

ब्रह्मरूप सद्गुरू छत्रपति राजा है। उन्होंने मुझे सेवकों में अधिपति कर दिया और मेरे हाथ में सोऽहं शब्द की सनद देकर मस्तक पर (मुद्रांकित) हस्त रखा।।1।

अहंकाररूपी दुर्ग को अधीन कर उन्होंने मुझे आगे भेजा। पूर्वद्वार से (गमन करते हुए) मैंने त्रिकुट देखा और वहां रजोगुणी ब्रह्मदेव को जीत लिया।।2।।

वहाँ से ऊपर चढ़ा तो मैंने पश्चिम मार्ग देखा, जहां श्री हाटस्थान में सत्वगुणी विष्णु वास करते हैं। इस स्थान का भी उल्लंघन कर ऊपर गया तो गोल्हाट में तमोगुणी रूद्र को देखा।।3।।

मैंने ज्ञान-शस्त्र हाथ में लेकर तमोरूपी अज्ञान का नाश किया। वहाँ से आगे मैंने एक पुण्यगिरि देखा जहां शुद्ध विश्वमूर्ति का अधिष्ठान है।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

उभा राहोनि तया गिरीवरीं।
देखें भ्रमरगुं'फा गडद ओवरी।
औटपीठावरूती शोभेबरी। परमानंद आहे तया धरीं।।5।।
बोधबळिया प्रवेशलों तेथ। अहंकार झाला वाताहत।
विजयदुंदुभि वाजति अनुहत।
ब्रह्मदृष्टींत पावलों निजविश्रांत।।6।।
भक्तिनिशाण चढविलें वरी। जें का ब्रह्म भासत चराचरीं।
रामनामें गर्जती जयजयकारी।
दासपणा न उरे तेथे उरी ।।7।।

(4)

सखया रामा विश्रांति तुझे नामीं।
म्हणउनि मजला ने त्वरें निजसुखधामीं।।ध्रू.।।
अवचट सुकृते नरदेहा झाली भेटी।
पशु-सुत-जाया-धन-धामीं प्रीती मोठी।
माझीं माझीं म्हणुनि म्या धरिलीं पोटीं।
यांच्या संगे भोगिल्या दुःख कोटी ।।1।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

उस गिरि के ऊपर मैं खड़ा रहा तो औटपीठ पर मैंने एक सुंदर, भव्य और विशाल भ्रमरगुफा देखी। इस घर में परम आनंद वास करता है।5।।

(सद्गुरू के दिये हुए) बोध के बल से मैंने अंदर प्रवेश किया, तो अहंकार (दशदिशाओं में) भाग गया। अनाहत रूपी विजयदुंदुभि बजने लगी और मुझे ब्रह्मदृष्टि में विश्रांति मिल गई।।6।।

मैंने भक्तिरूपी निशान को ऊंचा किया, जिससे (ज्ञात हुआ कि) चराचर में ब्रह्म ही भास रहा है और राम नाम के जयजयकार की गर्जना हो रही है। इतना होने पर वहाँ (भक्तों का) दास पण शेष नहीं रहता।।7।।

(4)

हे सखा, राम, तेरा नाम-स्मरण करने से विश्रान्ति मिलती है, इसलिये मुझे अपने सुखमय निजधाम में शीघ्र ले चलो ।।ध्रू.।।

पुण्य के कारण नरदेह की प्राप्ति अकस्मात् हो गई, किन्तु पशु, सुत, पत्नी, धन और गृह में ही गहरी प्रीति लगी, इनको 'मेरा' 'मेरी' ऐसा कहकर मैंने (मोह के कारण) हृदय से लगा रखा। इनके संग में कोटि दुःख भोग रहा हूँ।।1।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

सोडुनि स्वहिता धांवलों दिशा दाही।
शववत झालों मागुता कौतुक पाही।
परि खळजन हे नेदिती कवडी ते ही।
परि ही आशा पापिणी लाजत नाहीं ।।2।।
जंववरी दृढ़ता तंववरी या तनुची प्रीती।
जर्जर झालिया अवघेचि निंदक होती।
यार्ची दुःखें तुजला मी सांगू किती।
म्हणउनि येतो श्रीधर काकुळती ।।3।।

(5)

काय सांगू मी या संतांचे उपकार।
मज निरंतर जागविती ।।1।।
सहज बोलणें हित उपदेश । करूनी सायास शिकवीती।।2।।
काय द्यावें त्यांसी व्हावे उतराई।
ठेवितां हा पायी जीव थोड़ा।।3।।
तुका म्हणे वत्स धेनुवेच्या चित्ती।
तैसे मज येथे सांभाळीती ।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

स्वहित छोड़कर मैं दशदिशाओं में भटकता रहा, तदन्तर शववत् होकर (प्रारब्ध के प्रवाह को) साश्चर्य देखता रहा। दुष्ट लोग मुझे एक कौड़ी भी नहीं देते हैं किन्तु मेरी आशा इतनी पापिनी है कि उसे लज्जा नहीं आती ।।2।।

जब तक शरीर सुदृढ़ है तब तक इससे प्रीति लगती है, किन्तु जब यह जर्जर हो जाता है तब सभी इसकी निंदा करने लगते है। इस शरीर के कारण कितने दुःख होते है यह कैसे कहूं? इसलिये श्रीधर कहते है कि मैं व्याकुल होकर तुमसे करूणा की याचना करता हूँ ।।3।।

(5)

इन संतो के उपकार का वर्णन में कैसे करूं? वे मुझे सदैव जगाते रहते हैं।।1।। इनके सहज बोलने में हित और उपदेश रहता है, और वे स्वयं परिश्रम करके दूसरों को सिखाते हैं।।2।। इनके उपकार से उऋण होने के लिये इन्हें क्या दूं? इनके चरणों पर मेरा जीव अर्पण करना भी बहुत कम होगा ।।3।। तुकाराम कहते हैं कि जिस प्रकार धेनु के चित्त में वत्स रहता है उसी प्रकार वे यहाँ मेरी संभाल करते है।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

झाळी संध्या संदेह माझा गेला।

आत्माराम हृदयीं सहजीं आला ।।ध्रू.।।

गुरूकृपा निर्मल भागीरथी। शांति क्षमा यमुना सरस्वती।

ऐशीं पदें एकत्र जेथें होती।

स्वानुभव-स्नान हे मुक्तस्थिति ।।1।।

सद्बुद्धीचे घालोनि दर्भासन।

वरी सद्गुरूची दया परिपूर्ण।

शम दम अंगी विभूतिलेपन।

वाचेउच्चारी केशवनारायण ।।2।।

बोधपुत्र निर्माण झाला जेव्हा।

ममता म्हातारी मरोनि गेली तेव्हां।

भक्ति बहीण आली असे गांवा।

आतां संध्या करूं मी कैसी केव्हां।।3।।

सहज कर्मे झाली ब्रह्मार्पण। ऐसे ऐकोनी निवती साधुजन।

जन नोहे अवघाचि जनार्दन।

एका जनार्दनी लाघली निजखूण ।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(6)

संध्याकर्म होने पर मेरा संदेह चला गया, क्योंकि मेरे हृदय में आत्माराम सहज आ गये ।।ध्रु.।।

गुरूकृपा निर्मल भागीरथी है, शांति यमुना है, और क्षमा सरस्वती है। इन तीनों के संगम पर स्वानुभवरूपी स्नान करना मुक्त-स्थिति है।।1।।

सद्बुद्धि का कुशासन बिछाकर ऊपर से सद्गुरु की परिपूर्ण दया ओढ़लो। शमदमरूपी विभूति का लेपन करो और वाणी से केशवनारायण ऐसे उच्चारण करो ।।2।।

बोधरूपी पुत्र का जन्म होते ही ममतारूपी बुढ़िया मर गई, मेरे गाँव में भक्तिरूपी बहन आ गई, अब मैं संध्या कैसे कर सकता हूँ? ।।3।।

मेरे सर्व कर्म सहज ही ब्रह्मार्पण हो गये। यह सुनकर साधुजनों को संतोष हुआ। वे साधु (सामान्य) जन नहीं है, वे तो पूर्णतया जनार्दन हैं। जनार्दन स्वामी के शिष्य एकनाथ कहते हैं कि मुझे उनकी खूण (निशानी) मिल गई ।।4।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

निरंजनी वर्नी देखिली मी गाय।
तीन तिचे पाय चार मुख ।।1।।
सहस्त्र तिचे नयन नवतिचे कान।
सत्रावीचें स्थान एक शिंग ।।2।।
ऐशी कामधेनु व्यासानें पाळिली।
शुकानें वळिली जनकाघरी ।।3।।
तुका म्हणे ऐसे भाग्य नरा भेटे।
अभागी करंटे वायां गेले ।।4।।

(8)

देह तो पंढरी प्रेम पुंडलीक।
स्वभाव सन्मुख चन्द्रभागा।।1।।
विवेकाची वीट आत्मा पंढरीराव।
जेथें तेथें देव ठसावला ।।2।।
क्षमा दया दोन्ही रूक्मिणी ते राही।
दोहींकडे बाही उभी असे।।3।।
बुद्धि नि वैराग्य गरूड हनुमंत
कर जोड़ोनि तेथे पुढ़े उभे ।।4।।
तुका म्हणे आम्हीं देखिली पंढरी।
चुकबिली फेरी चौऽयांशीची ।।5।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera

(7)

निरंजन वन में मैंने एक गाय देखी, उसके तीन पांव और चार मुख है।।1।। उसके सहस्त्र नयन और नौ कान हैं, तथा सत्रहवें स्थान में एक सींग है।।2।। इस प्रकार की कामधेनु का महर्षि व्यास ने पालन किया। उसे शुकदेवमुनी जनक राजा के गृह में लाये।।3।। तुकाराम कहते हैं कि भाग्यवान् मनुष्यों को यह प्राप्त होती है और जो अभागा कर्मफूटा है वह तो व्यर्थ गया ।।4।।

(8)

देहरूपी पंढरी में प्रेम पुंडलीक है, सन्मुख स्वभाव रूपी चन्द्रभागा (बहती) है।।1।।

विवेकरूपी ईंटपर आत्मारूपी पंढरीराव (खड़े) हैं, जहां (देखो) तहाँ देव भरा हुआ है।।2।।

उसके दोनों ओर क्षमा और दयारूपी रूक्मिणी और राही खड़ी हैं।।3।।

सन्मुख बुद्धि और वैराग्यरूपी गरूड़ और हनुमंत हाथ जोड़कर खड़े हैं।।4।।

तुकाराम कहते हैं कि मैंने पंढरी देख ली और चौरासी का फेरा चुका दिया।।5।।

Shot on OnePlus
Powered by Dual Camera